आगम (Revenue)

(TR) कुल आगम :-

विक्रय की प्रक्रिया में पहली इकाई से लेकर अंतिम इकाई तक के विक्रय से अलग-अलग जो मौद्रिक प्राप्तियाँ होती है। उनका योग कुल आगम कहलाता है।

$$TR = P \cdot Q$$

कुल आगम = मूल्य × विक्रय मात्रा

(AR) औसत आगम :-

कुल आगम को विक्रय मात्रा से विभाजित करने पर औसत आगम प्राप्त होता है।

$$AR = \frac{TR}{Q}$$

$$AR = \frac{P \cdot Q}{Q}$$

$$\therefore AR = P$$

* यानि औसत आगम मूल्य के बराबर होता है क्रेता के लिए
* मूल्य और विक्रेता के लिए आय

सीमांत आगम (MR)

विक्रय की प्रक्रिया में अंतिम इकाई के विक्रय से होने वाली मौद्रिक प्राप्तियों को सी० आ० कहते हैं।

$$MR_n = TR_n - TR_{n-1}$$

जब स्थिर मूल्य पर वस्तु की मात्रा बेची जा रही हो तो कुल आगम रेखिक होता है और उसका ढाल धनात्मक होता है।

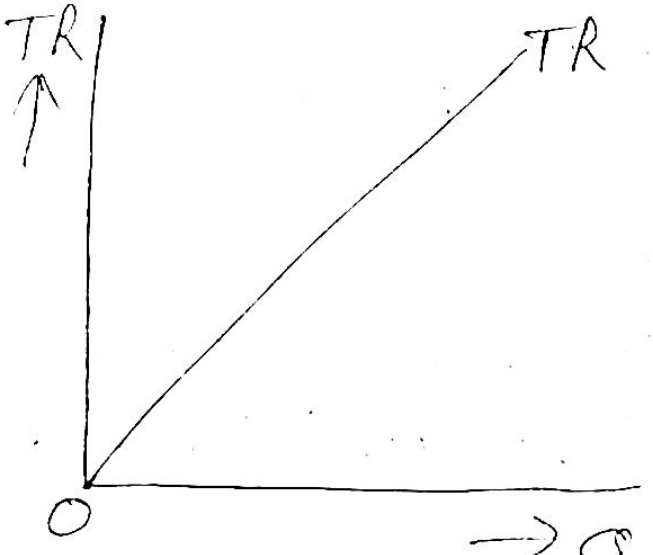

जब विक्रय मात्रा में वृद्धि के साथ मूल्य में कमी आती जाती है तो TR वक्र आगे की ओर झुकता हुआ होता है।

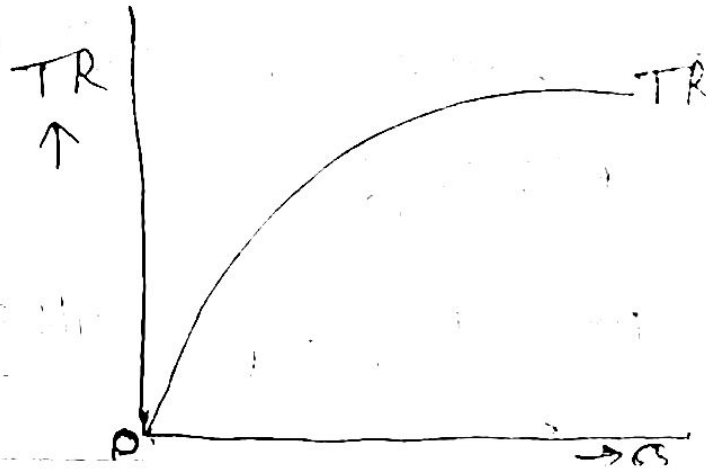

जब औसत आगम स्थिर होता है तो AR और MR एक दूसरे के समांतर होते हैं।

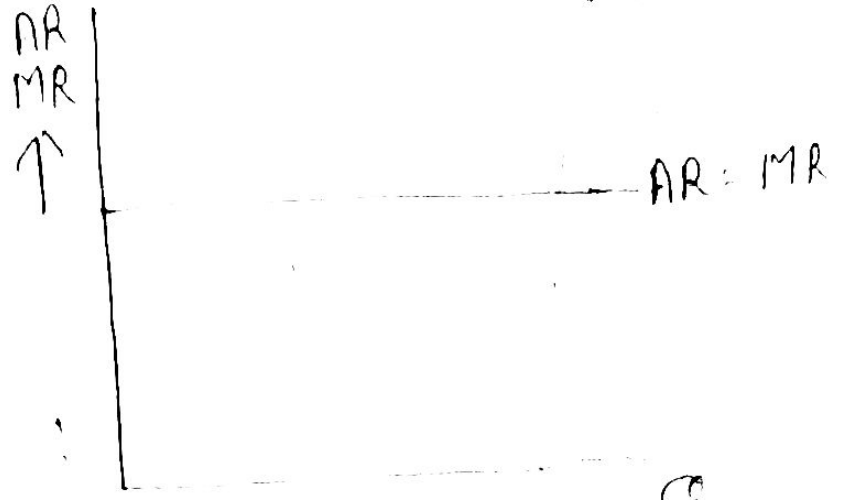

जब AR रेखीय होता है और नीचे की ओर गिरता हुआ होता है तो MR उससे दुगनी तेजी से गिरता हुआ होता है।

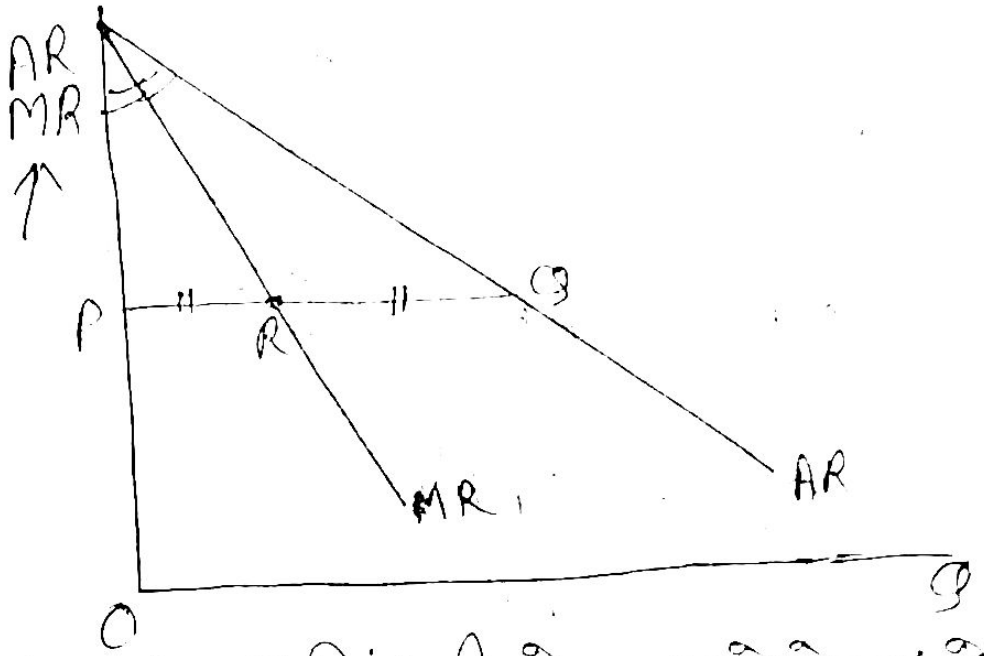

जब AR गिरता हुआ मूल बिंदु की ओर उन्नतोदर होता है

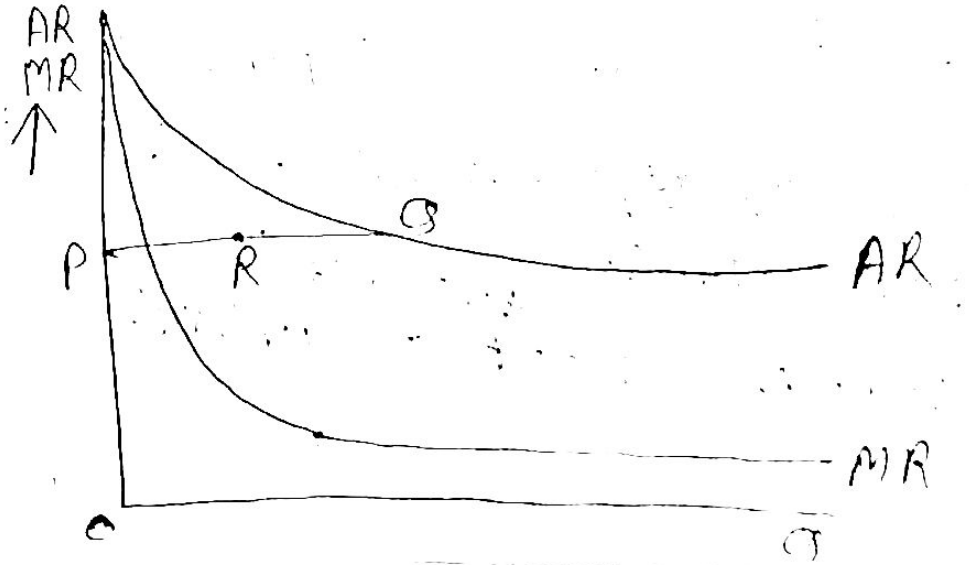

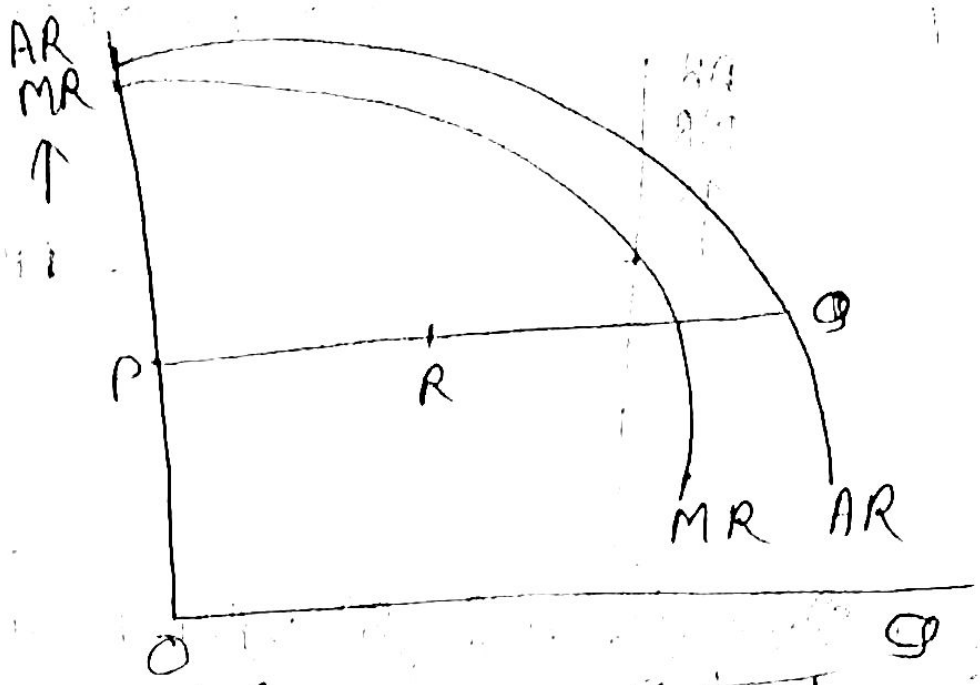

AR, MR तथा माँग की लोच के मध्य संबंध

$$AR = MR \left(\frac{e}{e-1}\right)$$

$$MR = AR \left(\frac{e-1}{e}\right)$$

$$e_p = \frac{AR}{AR - MR}$$

⇒ जब AR वक्र समकोणीय अतिपरवलय होता है तो उसके प्रत्येक बिंदु से संगत MR शून्य होती है

⇒ जब AR वक्र विकुन्चित या मुड़ा हुआ होता है तो उससे MR वक्र विखंडीत होता है।

⇒ समकोणीय अतिपरवलय (यानि AR वक्र) की माँग की लोच एक होती है।